

पद २६५

(राग: यमन जिल्हा - ताल: त्रिताल)

तोरे बन्सी के नाद दिवानी भई ॥ध्रु.॥ गौके बछरे भैंशी कु छोरी ।
बैल से दूध निकाल रही ॥१॥ नाक में सुरमा कानों में मिस्सी ।

नयनों में कुंकू लगाते रही ॥२॥ हाथों में पैजण पाँवों में चोली ।
शिरकु सारी लपेट रही ॥३॥ मानिक के प्रभु नाथ कृष्णजी । तोरे
मुरलीने बहुत जुलम की ॥४॥